

श्रीः

शिवदत्तकृतं

## पारिजात-नाटकम्

(सूत्रधार कथित-मञ्जुलगीतम् -)

देखि शुम्भ-निशुम्भ अतिबल,  
देव मुनिगण चरण सेवल,  
भेलि परसनि<sup>१</sup> सेवक-दाहिनि, सिंहवाहिनि हे ॥  
आए आदिकुमारि माता,  
सबहि कारज सिद्धिदाता,  
विन्ध्य जाए निवास-कारिणि, <sup>२</sup>अरिसंहारिणि हे ॥  
असुर<sup>३</sup> सुप्रिय देखि रूपा,  
कहहि शुम्भ-निशुम्भ भुपा,  
कोटि<sup>४</sup> शशि-सुरसम सुख्या, अतिअतूपा हे ॥  
धूम्रलोचन वीर जानी  
जाए कहिय [इ] मधुर बानी,  
करब घर सरदार रानी, जाए आनी हे ॥  
दूत<sup>५</sup> शुम्भ-निशुम्भ-प्रेषित,  
कहए लागल वचन अतिहित,  
होअह जाय त्रिपुररानी, चलि भवानी हे ॥  
धूम्रलोचन कोप कए मन,  
बाहु एकड़ए चलित तहि<sup>६</sup> छन,  
[तेहि] हुँकार सुनए दीन्हो, भयम कीन्हो हे ॥

१—प्रसन्ना । २—शत्रु के सारतिहारि । ३—सुप्रीय नामक असुर अर्थात् रूप देखि राजा शुम्भके कहलक । ४—कड़ोरो चम्प ओ सूर्यक समान । ५—शुम्भ-निशुम्भ-द्वारा पठाओल दूत । ६—'हित घन'—मूलपाठ ।



कालिके विस्तारवदना,  
 अति भयानक विकट-वशना<sup>१</sup>,  
 सोमए चञ्चल परम<sup>२</sup> रसना, सर्व-समाना हे ॥  
 लम्बितोदर मुण्डमालिनि,  
 चण्ड-मुण्ड विष्णोपकारिणि,  
 कालिके कर खड्गधारिणि, औरमारिणि हे ॥  
 रक्तबीज विशाल अतिव<sup>३</sup>,  
 आए बेरल अम्बिके दल,  
 विदु<sup>४</sup>सि दुर्गे ! हँसहि पल-पल, देवि<sup>५</sup> अरिदल हे ॥  
 विविध शक्ति स्वल्प धारिणि  
 रक्तबीज शरीर दारिणि<sup>६</sup>,  
 सकल सुरकुल कुशल कारिणि, दु<sup>७</sup>रित-दारिणि हे ॥  
 १३ यमर शम्भु-निशुम्भ खड्गिनि,  
 सकल गति निरिराज-नन्दिनि,  
 असुर मारिणि देवशन्दिनि, अरिनिशन्दिनि हे ॥  
 कृपा करिअ महेश-रानी,  
 जान नहि तुअ गति बखानी,  
 शिवदत्त इहो उचर वानी जय जय भवानी हे ॥१॥

(ततो नटी प्रवेशिका-गीतं गायति—)

१४ दुरत-शशि मम कला पसारि । कएल गमन गजगामिनि नारि ॥  
 हेरदत्ते वदन परम अभिराम<sup>१५</sup> । मुनिहुँ क मम धुनि बाढ़ल काम ॥  
 १६ रङ्गभूमि निअ मन अवधारि । नैसल रूपे निशकर<sup>१७</sup> हारि ॥

७—विकराल वंशधारी । ८—जीह । ९—राना—मूलपाठ । १०—सभक शम्भु  
 कयनिहारि । ११—सौम समाना—मूलपाठ । १२—शत्रु गण । १३—शिरनिहारि ।  
 १४—पापनाशिका । १५—गुह्य मे । १६—पूर्णचन्द्रक समान । १७—सुन्दर ।  
 १८—रमयं १९—चन्द्रमा ।

देखइते जगत रहल नहि धोर । सभ मन बाढ़ल शम्भुनमथ-पीर ॥  
 मन अवधारि रसिक रस जान । मन गुनि शिवदत्त एहो पद भान ॥२॥  
 (अथ नटी प्रति सूत्रधार कथित-श्लोकः—)

१८ सभानुरञ्जनशायि कृतं निर्येन एव च ।

परिपूर्णयि तस्यैव साहित्यं कुरुषे मम ॥१॥

(ततो<sup>१९</sup> नटी कृतकृत्यं करवाणीति<sup>२०</sup> कथयति । ततः सखी प्रति नटी  
 गीतेन कथयति—)

परम सुदिन दिन मोर सखि ! भेला । हरषि हसित पट्टु दरसन देला ॥  
 विदु<sup>२१</sup>सि-विदु<sup>२२</sup>सि मोर कहूँहि वानी । नृत्य करिअ परिपूरित आनी ॥  
 सभए सखी मिलि-जुलि चलि आउ । पट्टु मन धन अति मोद वड़ाउ ॥  
 मुनि मुनि सकल सखी मन मान । मन गुनि शिवदत्त एहो पद भान ॥३॥

(अथ कृष्णादि-प्रवेश-सूचना-गीतम्--)

साधव मनसिज<sup>२३</sup> मण्ड सवारे । देव<sup>२४</sup> पुरन्दर सहित कुमारे ॥  
 कहुमिनि सखी-सहित चलि आवे । सतभामा देवि मान जनावे ॥  
 उदव नारद-मुनि परवेसा । ऐरावत अतिसुन्दर गजेसा ॥  
 शिवदत्त हरि हरधु कलेसा । एहि नाटक एतवा परवेसा ॥४॥

(अथ स्वतः श्रीकृष्ण-प्रवेशिका-गीतम्--)

माथे मुकुट, तिलक वनमाले । पीत-वसन तन मदनगोपाले ॥  
 कुञ्जभवन साधव परवेसा । मूरति दयाम मनोहर भेसा ॥  
 परम सोहाओन नयन-नय फूल । उदव संग हरि बूलल बूल ॥  
 मन-मन गुनि शिवदत्त पद भान । रसिक गोपाल सभे रस जान ॥५॥

१८—कामदेवमा । १९—सभाक मनोरञ्जनक हेतु ओ वैदिक कृत्य भेलाक  
 कारणे तकरे (नाट्य-कलाक) पूर्णताक हेतु अहाँ हमर सहयोग करैत छौ ॥१॥  
 २०—तलम नटी कृतकृत्य (धन्य) होइत करैत छौ—ई कहैत छथि । तखन नटी गीत  
 द्वारा कहैत छथि । २१—कामदेव । २२—इन्द्र ।



(अथ रुक्मिणी-प्रवेशिका-गीतं गायति--)

सुन्दर परम मगन छल वेश । एहि अवसर रुकुमिनि परवेश ॥  
 गजगामिनि कामिनि कत साथ । मिलि जुलि चललि कान्हू दए हाथ ॥  
 चलइते पगु नेपुर घहराए । रुनुशुनु बिछिपा सबद सुनाए ॥  
 कटि किङ्किणि नेपुर भल बाज । गाव मधुर धुनि मज्जल आज ॥  
 आइलि सखिगन बहुत समाज । देखल कमल-नयन वजराज ॥  
 शीवदत्त भन सुमरि भवानि । शरण देहु शरणागत जानि ॥६॥

(अथ सखी प्रति रुक्मिणी-कथित-गीतम्--)

आएल देखल हम ओ ओ रे, [चल] गेल,  
 प्रेमक नेम<sup>२३</sup> बेकत भेल ॥  
 देखि हरष हिथ ओ ओ रे, देखल  
 नेहक<sup>२४</sup> लता असेधल ॥  
 एहि विधि बान्हल ओ ओ रे, मोर मन,  
 डोलि सकत नहि बहुजन ॥  
 शिवदत्त कवि ओ ओ रे, पद भन,  
<sup>२५</sup>तोरित पुरह हरि मोर मन ॥७॥

(अथ रासगीतं गायति -)

फुलल सेउँति<sup>२६</sup> चमेलि माधवि, बेलि कुन्द नेवारि ओ ।  
 खेलति रुकुमिनि कृष्णके संग, गेन गेनहि मारि ओ ॥  
 शङ्ख बाज मरङ्ग सुन्दर, बाँसुरी कठताल ओ ।  
 कएल हरखित सकल सखिगन, नाचि नाचि गोपाल ओ ॥  
 केलि सभ मन मगन भए गेलि, करए हरष हुलास ओ ।  
 ... .. ॥

नारि लए लए कोर भए गेल कृष्ण पुरत-चन्द ओ ।  
 शिवदत्त भन चरन मन दए, मेठहु दाहन दन्द<sup>२७</sup> ओ ॥८॥

२३ - अङ्कुर नवल भेल । २४ - हनेहक लत्ती मे कसिकय बान्हल । २५ - शीघ्र ।

(अथ राज्ञा-गीतम्--)

कुञ्जभवन कर रास मुरारि । हरखलि सकल जतेक छलि नारि ॥  
 एक बेरि सभ मिलि उपर निहार । अचरज देखि देखि मनहि विचार ॥  
 कीदहु पायक ? - गगन विराज । कीदहु उगल दोसर रवि २६ आज ॥  
 तखन बुझाए कहल भगवान । नारद पे<sup>२७</sup> थिक एह परमान ॥  
 ब्रह्मतेज दुति ३० जितए हुतासे ३१ । रविसम दोसर देखिअ अकासे ॥  
 से सुनि सखी सकल मन मान । मन गुनि शिवदत्त एही पद भान ॥९॥

(अथ नारद-प्रवेशिका-गीतम्--)

इन्द्रभवन सखी मृनि चल अएलाह, एहि जग लेल परवेश ।  
 शोती बवल तिलक शिर राजित, [ ता ] सभ शोभित केश ॥  
 अनुपम सुरभि<sup>३२</sup> गवहि मन भावए, लागि रहल हरि आस ।  
 हमर सन्देश सुनुति<sup>३३</sup> कए राखल, पसरल सगर सुवास<sup>३४</sup> ॥  
 कतेक जतन - मोहि<sup>३५</sup> सुरति देखिष्ट, थिक अनुपम बहुमूल ।  
 मारव हँसि हँसि हरि-कर देलहि, पारिजात एक फूल ॥  
 फूल पावि हरि हृदय लगाओल, मुनि कह पुछल विचार ॥  
 कजोनहि कर एह फूल हम देखओ, सोरह गहय हजार ॥  
 हरिक वचन सुनि, कहल नारद मुनि, मन दए सुनु मोर बात ।  
 हूँ सोहागिन<sup>३६</sup>, लग छवि रुकुमिनि, देखनु तनिकहि हाथ ॥  
 मुनिक बचन सुनि, देल हरि रुकुमिनि, सोचए लागलि छनि मान ।  
 ३७ हेमनिरि-कुमरि चरण शरण धरि, शीवदत्त कवि भान ॥१०॥

(अथ रुक्मिणीहर्ष-गीतम्--)

जप तप पुरुष जनम हम कएलहु<sup>३८</sup>, जतेक पुजल हम गौरी ।  
 पारिजात हरि हँसि कर देलन्हि, सभ परिपूरलि मोरी ॥

२६ - (?) । २७ - कशेर इन्द्र (संघष) । २८ - अग्नि । २९ - सूर्य । ३० - षुति (मृति) । ३१ - अग्नि । ३२ - सुगन्धि । ३३ - मुपल कए । ३४ - सुगन्धि । ३५ - हृषीकेश (नारदके) हमरण करओलनि । ३६ - सौभाग्यवती सरयु नामा नदी । ३७ - ३० - पार्वती ।



दिश मोर हरेलें जुड़ाएल हें सखि ! हरि फुल देल मोर हाथ ।  
जानल मान बहुत कए अपनो, सोइह सहस गोवि साथ ॥  
मन ३० परिहरि हर फुल मोहि देखन्हि, उपर रहल मोर माथ ।  
जीवन जगम मोर भेला सोमारथ कृपा कएल मदुनाथ ॥  
आनन्द उर न समाइछ हे सखि ! जानि अपन बहुमान ।  
हरि - परकमल हृदय धरि राखला, शीवदत्त कवि भान ॥११॥

(नारद-प्रस्थान-गीतम् -)

ई देखि तोरित ३१ बल्ल मुनिराजे । ३२ बानव-गरव निवारण काजे ॥  
हरिक सोहागिनि जगए निवासे । जैसला जाय सखन तमु पासे ॥  
हरपित भेलि मुनि दरसन पाए । कएल प्रणाम चरण चित-हाए ॥  
आसन धए लेला चरण पखारि । पिबयक देलनि शीतला ४१ बारि ॥  
मुनि हरपित अति आदर जानि । शीवदत्त भन मन अनुमानि ॥१२॥

(अथ नारदं प्रति सत्यभामा-कथित-गीतम्-)

मुनिक समादर कव जत जानि । लागलि कहए वचन अनुमानि ॥  
लागल आस हपर मन माहि । हरिक कुशल किछु पाविअ नाहि ॥  
तीन भुवन हित जानिअ तोहि । माधव खरि सुनाविअ मोहि ॥  
नारद कहए लग किछु बानि । शीवदत्त भन मन अनुमानि ॥१३॥

(अथ सत्यभामां प्रति नारद-कथित-गीतम्-)

एखन छलहुं हरिक हम साथे । एकुमिनि सहित चलल प्रजनाथे ॥  
गेल छलहुं हम सुरपति-पासे ३१ । पाओल फुल एक परम मुवासे ३२ ॥  
वारिजात थिक नामक फूले । एक संसार अनूप अमूले ॥  
कलावृक्ष भए होल अवतारे । ३३ वासव को थिक अधिक विआरे ॥

३० - सज के लोड़ि । ३१ - शीघ्र । ३२ - इन्द्रक गर्वके हृदयवाक हेतु ।

४१ - जल । ४२ - इन्द्रक लग । ४३ - सुगन्धित । ४४ - इन्द्रके ।

आनि तेहन फुल हरिके देला । देखयित हरि अति हरपित भेला ॥  
बिहुं सि धिहुं सि फुल एकुमिनि देला । एको बेरि अहाँक नाम नहि होला ॥  
दिन-दिन छोड़ि परब एहि रीति । कोन परि बुझब हरिक विरीति ॥  
धाओत जानि जखन बड़ मोट । बाढ़ल नहि होअ तरजर छोट ॥  
मान करब मन अगम अपार । जा धरि नाछ लागए नहि द्वार ॥  
ई कति नारद कएल प्रथान । मन मुनि शीवदत्त पद भान ॥१४॥

(अथ सत्यभामां प्रवेक्षिका-गीतम्-)

मुनि मुनि-वचन परम मन मान । विशरल सकल हरष ओहिठाम ॥  
अधर न हास बोलयि विछु नाहि । विरह-पराभव अति मन माहि ॥  
फूल धिपुर ३४ मलिन तन भेस । सतभामा देखैल परवेस ॥  
गिअ अपमान परम मन मानि । शीवदत्त भन मन अनुमानि ॥१५॥

(अथ सखीं प्रति सत्यभामा-विलाप-गीतम्-)

मुनिक वचन मुनि मन आकुल, दुर गेल मोरव आज ।  
एत अपमान सह्य नाह पाविअ सुमरि सुमरि हरिकाज ॥  
आब उचित कोन जीवन हे सखि ! रहल हमर नहि मान ।  
मोर मन दइ भेला पुष्प अपन नहि, से जग के नहि जान ॥  
भूषण वसन उतारि नछाओला, जानि अपन अपमान ।  
गुन मोरव सभ भेल अकारव ३५, अब हम तेजव परान ।  
सुनह तवन सखि ! अविद्धि [यदि] हरि, एकुमिनि-पति-अजराज ।  
टूटल मिनेह नेह जत लाओल, दुर गेल दुरमति आज ॥  
३६ कलाह विचारद नारद हे सखि ! अयनहि बुझ परमान ।  
हेमगिरि-कूमरि चरण चरण धरि, शीवदत्त पद भान ॥१६॥

[अथ सत्यभामा-समोवे श्रीकृष्णामन-गीतम्-]

नारद कलाह-विचारद थिक ई, सेहो मन नहि अवधारी ।  
ति तोरित हरि आए तुलाएल, करदत घनिक पुछारी ॥

४१ - कोश । ४२ - अर्थ । ४३ - जगड़ा समर्थ । मे निपुण ।



कहहु वचन सखि ! कतए आएल छयि, थिक थिक कुमुनि-नाथ<sup>४८</sup> ।  
 परम कलेश भेल धनि अएलहि वाहि वसन<sup>४९</sup> निज माथ ॥  
 आकुलि बिरहु बेजाकुलि भेलो, सखिसभे<sup>५०</sup> बात जनाब ।  
 बीष सानि जनि तोर लगाओल हरिक वचन सुनि पाव ॥  
 हरिक वचन सुनि भेलिह बेमुधि धनि, बैसि रहल मुख फेरि ।  
 ई पाचक दाता मुख हेरहु, हरखि हरखि एक बेरि ॥  
 गिरि तह<sup>५१</sup> गरुड मान कर भाबिनि, बस एक हरि रस जान ।  
 हरिपद कमल हृदय धरि राखिअ, शीवदत्त पद भान ॥१॥

[अथ मानिनी प्रति हरि-कथित-दोहा]

जओ<sup>५२</sup> किछ भेल अपराध धनि, मानिनि छेमहु मोर ।  
 एतेक उचित नाह मान गोहि, गिरि तह अधिक कठोर ॥१॥

[अथ मानिनी-कथित-दोहा-]

एहि सभ<sup>५३</sup> कहने शक नहि, हृदय जल अछि मोर ।  
 पहिने हृदय सताय कहुं, आव कर छथि सोर ॥२॥

[अथ दूती प्रति हरि-कथित-दोहा-]

धनि मानिनि अति जानि कहुं, हरि लेल दूति बजाए ।  
 मन में प्रेम बड़ाए कहुं दूती ! देहु मनाए ॥३॥

[अथ मानिनी प्रति दूती-कथित-दोहा-]

तोहि मनाओन हे सखि ! आए मदन - गोपाल ।  
 देखे सरतन<sup>५४</sup> रसमदन के, भले लड़े हएँ लाल ॥४॥

४८—ओ हविमयीक प्रति बिकाह-हमर नहि । ४९—वस्त्र से । 'वाहि रनि'  
 मूलपाठ । ५०—'सखि सित दात जेनाब'—मूलपाठ । ५१—पहाड़ सग  
 जारी । ५२—'सब भुक हम शक'—मूलपाठ । ५३—कामदेवक ।

तुख देखन के लालसा, व्याकुल फिरत गोपाल ।  
 कनक<sup>५५</sup> रङ्ग को जानि के करे अधर धरि लाल ॥५॥  
 मोहे मन सब सखिन के, फिरत फिरें वन मांह ।  
 सो हरि आज तुख मिलन को, आए सखिन के बाह ॥६॥  
 पुर्यों गली<sup>५६</sup> पर अपर शशि, उगे दुहु एक ठाम ।  
 मध<sup>५७</sup> शशि फूले कमल-पुग, देखहु कमल से श्याम गजा

(अथ मानिनी-कथित-दोहा--)

हमर मिलन चाहत नहि, निशि-बासर नहि चैन ।  
 श्याम<sup>५८</sup> रङ्ग को जानि के, श्याम करे निज नैन । ॥१॥  
 वचन मधुर अति श्यामके<sup>५९</sup> अन्तर कपट निदान ।  
 प्रीतिकरी जग जानि कहुं, जे सभ बिन सविमान<sup>६०</sup> ॥२॥  
 हरिक सोहागिनि जगज सरि, नाम हमर भेल सोर ।  
 हेसत सखीमन जानि कहुं एहन करम मोर मोर<sup>६१</sup> ॥३॥

(अथ मानिनी-कथित दूती प्रति विलाप-गीतम्)

गुण-गौरव सखि ! मोर दुरि गेल । हरि हंसि फूल कुमुनि के<sup>६२</sup> देल ॥  
 हे सखि ! रहल हमर नहि मान । नेह करइत हो परम गलान<sup>६३</sup> ॥  
 पुरुष नेह जत कहइत लाजे । आव सखी ! हम अएलहुं बाजे ॥  
 मन गुनि शीवदत्त पद भान । रसिक गोपाल सभए रस जान ॥४॥

(अथ मानिनी प्रति दूती-कथित-गीतम्)

मान कला धरि बंसलि सुन्दरि, मोह-मगन भेल मदन-मुरारी ।  
 जानहि रिझावधि वेनु बजावधि, विकल भेल गिरिधारी ॥

५४—सोनाक रंग के सदायक वर्ण बूति । ५५—पूर्णचन्द्रमा पर दोसर चन्द्र (कृष्ण) ।  
 ५६—दुगु चन्द्रक बीच में कमल (रतन) । ५७—कृष्णक वर्ण के श्याम जानि । ५८—  
 मोत । ५९—अवमान करैत । ६०—मन । ६१—बाह ।



चरण कमल सन, अति छवि भूषण, मुखरूप चान समान ।  
नयन सरोज<sup>६२</sup>, अधर फुल मधुरी, अकुटी कुटिल कमान ॥  
<sup>६३</sup>मदन वेचल सन, किछ न भावय मय, फिरण फिरए बजरज ।  
विधिवस, दिन दस यौवन घन सखि ! न कर विमुञ्ज मन आज ॥  
तुअ बिनु हरि निशि वसि गमाओल, बढ़ल वेआकुल काम ।  
हृदय कठोर ओर धए राखिए, कओन उचित परिनाम ॥  
चानक जोति जगत सभ जगनत जे निरमल छवि तोर ।  
हृदय कठोर देख तुह सुन्दरि, जे नहि तोहर इजोर ॥  
काज न आओत मोरव हेसखि ! अब उचित नहि मान ।  
हरिपद कमल हृदय धय राखल, शिवदत्त पद गहो भान ॥१६॥

(अथ मानिनी प्रति दूती-कथित-कवित्तमाह—)

जाए कहै दुति<sup>६४</sup> मानिनि सौ, अलि ! आए खड़े हँ कुमर कहाई ।  
मन ही कछु सोचत हँ मनमोहन, मैं अब तोहि मनाओन आई ॥  
आप न आए सके हरि जू, इस कारण दूती मोहि पठाई ।  
जाए मिली हरि सौ अब ही, रहए सगरे तुम्हरी चतुराई ॥१७॥

(अथ मानिनी-कथित-कवित्तम्—)

रुकुमिनि के न मनावत हँ सखि ! प्रीति नई उनकी तनकी है ।  
तू क्यों बात बनावत है, उन सौ हमको पगरोट करी है ॥  
बिस मारि बुझा[वत है] हमको, जिहि कारण ते मुख की चटकी है ।  
कहए कछु अबो कछु अओरन की, [सखि !] कौन कहै उनकी मनकी है ॥१८॥

[अथ मानिनी प्रति दूती-कथित-कवित्तम्]

क्यों तोहि आनि पड़े मन में, सखि ! बैठि रही अपनी गृह जाई ।  
— — — — —

उनकी कछु बात सोहात नहीं, मोहि तू क्यों बात बनाओन आई ।  
कह केँ तुम आनि लगावत पानि में, एही वनी तेहरी चतुराई ॥१९॥

[श्रीकृष्ण प्रति दूती-कथित-कवित्तम्—]

मालति नाहि मनावत हँ कत, की जग मे रिति नई भई है ॥  
उनते कछु उत्तर देन नहीं, हम ही जग मे बदनस<sup>६५</sup> भई है ॥  
हरि ! बात जनावत आपे न क्यों, अब जाइ मनाइ [उपाय करी] है ।  
दूती के बात सुने मनमोहन, आपहि खड़े बटुराइ [हरी] है ॥२०॥

(अथ मानिनी प्रति हरि-कथित-कवित्तम्—)

काहे को मान जनावति सुन्दरि ! क्या तोहरे मन कपट भरी है ।  
दोपन कौन से मोर पड़ी, अलि ! सो नहि सो ही जानि परी है ॥  
क्या तोहि रोस भई मन सुन्दरि ! नैन तिहारो जोग नई है ।  
योगिनि नारि तिहारि सही, हमरे दिल से कुछ सोच भई है ॥२१॥

(अथ मानिनी-कथित-कवित्तम्—)

काहे को बात सुनावत हौं अलि ! मैं अपने [हिय] दुःख भरी है ।  
बाध तेहारो सोहात नहीं मोहि मेरे दिल बिच रोस भरी है ॥  
काहे को सोचत हौं मनमोहन, जाहुतहाँ जहाँ प्रीति नई है ।  
जाहुनि जाहुनि जाहु, चला, अब खोद जो तालन शोर भई है ॥२२॥

(अथ श्रीकृष्ण-कथित-कवित्तम्—)

काहे को चोर उपेखि नड़ाउति, काहे को भूषण भार भई है ।  
भानन क्यों तुम फेरि रही, इस कारण दिल बिच सोच भई है ॥  
बात कछु न सुने हरिके, इह मानिनि केवल मानभई है ।  
बोलहु बोल कहै निसि-बासर, प्यारी से ना गमरी तो भई है ॥२३॥

(अथ मानमोदितम्—)

हरि वैमुखि देखि कलावति रे, सम्मुखि नहि होइ ।  
भूषण वसन उतारल रे, फेकल सभ कोइ ॥



कोटि कला हरि लावधि रे, नहि बोलै बानी ।  
गिरिवत मान धएल धनि रे नहि हेरए सयानी ॥  
देखल वदन मलिन कए रे, मने ज्ञान हरि जेत ।  
छन-छन मन आकुल हो रे, सएन बएन नहि देत ॥  
परसन धनि कए अपन मन रे, परितेजिअ माने ।  
हरिपद कमल हृदय धरि रे, कवि शिवदत्त भाने ॥२०॥

(अथ मानिनी-कथित-गीतम्—)

जत जत हुनि हरि भाषल रे, राखल एकओ नहि धीर ।  
जो मोहि बुझि<sup>६६</sup>अवधारथ रे, <sup>६७</sup>सारथ नहि हरि-गौर ॥  
मन दए हमर बचर सखि रे, हरि [काँ] कहिअ बुझाय ।  
पारिजात तह आनखि रे, देखु मोहि द्वार लगाय ॥  
सब परिहरि जो हरि मोर रे, वचन सुनधि जो कान ।  
मन मैह कएल कठिन प्रण<sup>६८</sup> रे, से जो राखि मान ॥  
से परिपूरधि मोर हरि रे, परितेजिअ [हमे] मान ।  
... ..  
शिवदत्त भन मन दए रे, छोड़िअ कपट पट आज ।  
<sup>६९</sup>चाँकिहि नयन निहारलि रे, मन चएन कएल ब्रजरज ॥२१॥

(अथ मानिनी प्रति श्रीकृष्णकथितगीतम्—)

एक फुल लए धनि रुसलि रे, मन कएल पवान<sup>७०</sup> ।  
<sup>७१</sup>जामिनि आए निराइलि रे अब होएत विहान<sup>७२</sup> ॥  
भ्रमण वसन समारिअ रे, देखि नयन जुड़ाए ।  
आनव गाछ फलक हम रे, देव द्वार लगाए ॥  
परसन कएल वदन धनि रे, हेरु नयन उबेरि ।  
वदन वसने<sup>७३</sup>अभिमत कए रे, बोललि मुख मोरि ॥

६६ - अवधार्य (कृति) । ६७ - सारथ । हरिक वचन अर्थयुक्त नहि । ६८ - कठिन प्रतिज्ञा । ६९ - कटाक्ष । ७० - पावर । ७१ - राति आनि समाप्त भेलि । ७२ - प्रात । ७३ - वस्त्र युक्त मुँह को सुकाए ।

बएन बएन मुनि मन भेल रे, मन पूरव तोरि ।  
... .. ॥  
लुलुषल रसे<sup>७४</sup>रसिक-जन रे, रसमय रस जाने ।  
हरि पद कमल हृदय धरि रे, शिवदत्त पद भाने ॥२२॥

(अथ श्रीकृष्णकथितं नारदं प्रति गीतम्)

अनुमति कए दृढ़<sup>७५</sup>दिन मन रे, लेल मुनिहि बजाए ।  
इन्द्रक भवन सिधारिअ रे, सभ कहिअ बनाए ॥  
पारिजात तोरित आनिअ रे, मोहि एए हनु लाए ।  
जाहि कारण धनि रुसलि रे, देव द्वार लगाए ॥  
इन्द्रक सभा तुलाएल रे, मुनि नारद आजे ।  
शिवदत्त भन मन दए रे, देखल सुरराजे<sup>७६</sup> ॥२३॥

(अथ <sup>७७</sup>सखी प्रति सत्यभामा-कथित-गीतम्—)

जनम <sup>७८</sup>सोगारथ ओ ओ रे, भेल मोरि,  
राखल गौरव मोर हरि ॥  
के अछि एहनि ओ ओ रे, कहवै काहि  
एहन हरष भेल रह जाहि ॥  
सुरपुर <sup>७९</sup>सौं हम ओ ओ रे, लाओल  
से मोर द्वार लगाओल ॥  
श्यामसुन्दर मन ओ ओ रे, भाओल  
लोचन-गुगल जुड़ाओल ॥  
चान समान एहो रे, हरिमुख  
बैसइते उपजल मन मुख ॥

७४ - स्थिर दिन । ७५ - दृढ़ । ७६ - प्रसङ्गानुसार एहि सँ पूर्व इन्द्रक उक्ति नारदक प्रस्थान कृष्णक संग्रामार्थ प्रस्थान आविक उपन्यास उचित । प्रायः लेखक प्रमादात् तीन चारि गीत छुटि गेल । गीत सं०—२४ तथा २५ अपिस तीन गीतक भाव रह्य से उचित । ७७ - ज्ञान लेखाक मुख । ७८ - स्वर्ण सँ गाछ लाओल ।



कमल-नयन हरि ओ ओ रे देखल

[फोटि हृदय-सुख लेखल] ॥

शिवदत्त कवि ओ ओ रे पद भन

॥<sup>११</sup>मममथ उपगत भेल तन ॥१५॥

अबि च—

भेल सखि ! परम सुदिन दिन आजै । देखल पारिजात तराजे ॥

शोक कलपतरु हुनके नाम । तोरित मनक परिपूरल काम ॥

... .. ॥

... .. ॥१६॥

(अथ जयन्त-प्रवेश-गीतम्—)

रथ बढि आएल कुमर जयन्ते<sup>६०</sup> । कृष्ण-नयन<sup>६१</sup>मनमथ बलवन्ते ॥

भारो युद्ध पड़ल ओहिठामे । देखि देखि हरषित वासव-श्यामे<sup>६२</sup> ॥

बहु बल देव बरोबरि देख । ककरो सँ भङ्ग समर नहि भेल ॥

भाइ भाइ रण भेल भयान । लड़ए ऐरावत गरुड़ निदान ॥

॥<sup>६३</sup>वासव सँ यदि भिड़ए गोपाल । डोलए महि कौपए दिगपाल ॥

शिवदत्त भन सुमरि भवानि । हमर मनोरथ पूरह आनि ॥१७॥

(अथ इन्द्र-कृष्ण-संग्राम-गीतम्—)

॥<sup>६४</sup>ऐरावत-पिठ सुरपति सजनि मे लगपति-पिठ हकुमिनि-पति ।

पाथर बज्र अस्त्र कर सजनि मे संग शोभय नव जलधार ।

अस्त्र मदा कर श्यामक सजनि मे निरखत अति अभिमान ।

शिवदत्त एही पद भान सजनि मे रसमय केँ रम जान ॥१८॥

६६—कामवेश उपरिमत भेल ।

६०—इन्द्रक पुत्र जयन्त । ६१—कृष्णक पुत्र कामवेश । ६२—इन्द्र ओ कृष्ण । ६३—

इन्द्र सँ । ६४—एहि गीतक पाठ इतस्ततः भए गेल अछि ।

(अथ तयोः संग्राम-गीतम्—)

सखि आएल बल [गवित] सुरपति, संग पयोधर<sup>६५</sup> जाल ।

कए मन कोप बलल हरि यावत, कौपए दस दिगपाल ॥

सुरपति उर हेरि हरि मन भाओल, अस्त्र मदा कर साज ।

कोप भरिय भरि बलल पुरन्दर<sup>६६</sup>, हुन्हुमि<sup>६७</sup>बहु दिशि बाज ॥

मदन-मुरारि विचारि समारल, फेकल मन अनुमानि ।

जाय मदा उर लागल सुरपति, [सभकाँ] मारल हानि ॥

पारिजात एक गाछ उपाड़ल, अपनहि फुलवन जाए ।

जहि कारण धनि रुसलि छलिहे, से देख द्वार लगाए ॥

परसनि [भए] करि [हेर] आवे धनि, आव छवित नहि मान ।

पारिजात तरु द्वार निहारिअ, न करिअ हृदय पषान<sup>६८</sup> ॥

अवनुन परिहरि हरमि निहारल, तेजल मानिनि मान ।

हरिपद कमल हृदय धरि राखल, शिवदत्त पद भान ॥१९॥

(अथ मानभङ्ग-गीतम्—)

॥<sup>६९</sup>विमुखि ! सुमुखि भए, सदाय हृदय कय, बाँके नयन हरि हेरि ।

कीदहुँ रङ्ग<sup>७०</sup> परसमनि पाओल, बिहुँसि हँसलि मुख मोरि ॥

आए अघर पर छुटल चिकुर<sup>७१</sup> लट, मनमथ<sup>७२</sup> हरि मन जाग ।

नागरि एहन सन जनि शशि<sup>७३</sup> ऊपर, पियए अमिअ-रस<sup>७४</sup>नाग ॥

मानवती संग रसिक शिरोमणि, कएल अघर मधुपान ।

मन अवधारि जानि गुनगौरव, करिअ आलिङ्गन दान ॥

कनक-लता सनि नागरि निरखति, [निरखत] नन्दकुमार ।

शिवदत्त कवि गाओल [मन दए], पसरल प्रेम पसार ॥२०॥

इति श्रीशिवदत्तकृतं पारिजात-नाटकं

समाप्तम् ॥

६५—पयोधक समूह । ६६—इन्द्र । ६७—रणवाह । ६८—पाथर ।

६९—विगड़लि सँ प्रसन्ना भए । ७०—वरिष्ठ जेना स्वर्णमणि पवि गेल हो ।

७१—कोल । ७२—कामवेश । ७३—चन्द्रकपी नामिकाक मुँह पर ।

७४—नागरकपी कृष्ण अमृत पीन्हि ॥

★